02.12.2022

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "झारखण्ड राज्य के वन मृदा कार्ड" को जारी किया गया

भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के पश्चात् भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् , देहरादून दुवारा शुरू किये गए AICRP-22 के अंतर्गत वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम मे दिनांक 02.12.2022 को मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख डा. संजय श्रीवास्तव , IFS, दुवारा "झारखंड राज्य के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी किया गया

संस्थान द्वारा जी.आई.एस - रिमोट सेंसिंग की सहायता से झारखण्ड राज्य के 31 प्रादेशिक वन प्रमंडलों के 1311 स्थानों से मिट्टी के नमूने तीन अलग अलग गहराई यानि 0-30, 30-60 और 60-90 सेमि से एकत्र कर संस्थान के प्रयोगशाला में 16670 मृदा विश्लेषण किया गया और सांख्यिकी मदद से नमूना बिंदुओं तथा मृदा में उपलब्ध बुनियादी, प्रमुख माध्यमिक एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का सीमांकन कर सम्पूर्ण डाटा का सत्यापन कर देश में सर्वप्रथम झारखण्ड राज्य के 31 वन प्रमंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया

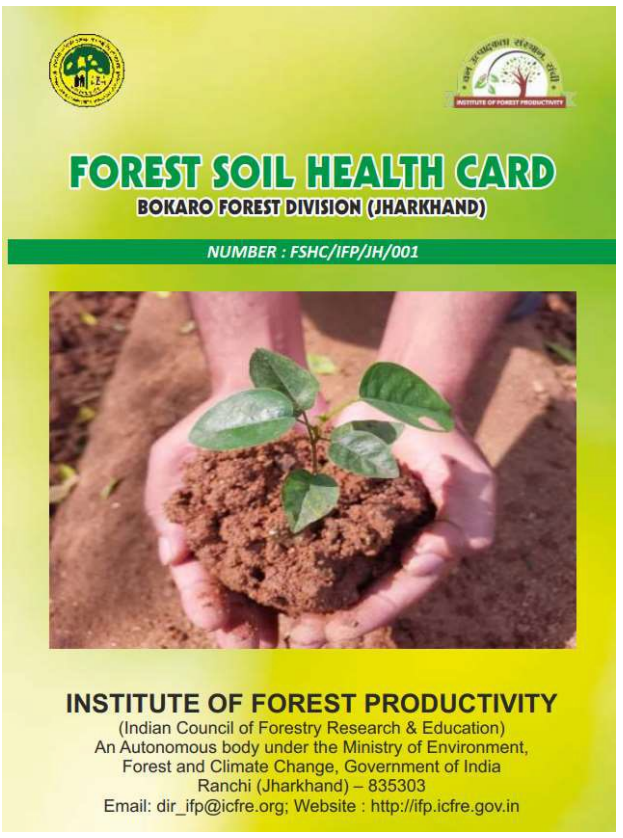

PHYSIOGRAPHIC DETAILS

Geo coordinates (Extent)	23.4348 - 23.9340N 85.4449 - 86.36245E
Sampling Period	November, 2020
Altitude (m)	269-707
Aspect (Degree)	10.04-334.57
Slope (Degree)	1.90-49.85
Hillshade (Degree)	142-251
Forest Group Type	5-Tropical Dry Deciduous
Forest Class	MDF, OF

FOREST COVER CLASSWISE SPECIES

Forest Class	Common Species
Very Dense Forest (VDF)	---
Moderately Dense Forest (MDF)	Sal, Rohan, Gijin, Amaltas, Palas
Open Forest (OF)	Chirounji, Bahera, Sal, Mahua
Scrub Forest (SF)	---
Non Forest (NF)	---
Amelioration	
1. Lime (t/ha)	--
2. Gypsum (t/ha)	--

The (--) sign denotes no amendment is required.

The (---) No Species Recorded as the particular forest class was absent in the forest division.

SOIL TEST RESULTS

SL	Parameters	Standard Value (Average)	Test Value
1	pH	5.47	5.17
2	EC (dS/m)	0.06	0.02
3	Organic Carbon (%)	0.81	1.18
4	Available Nitrogen (kg/ha)	258.32	326.57
5	Available Phosphorus (kg/ha)	17.39	9.47
6	Exchangeable Potassium (kg/ha)	179.55	142.28
7	Available Sulphur (ppm)	1.2	0.33
8	Available Zinc (ppm)	1.82	1.29
9	Available Boron (ppm)	1.25	1.51
10	Available Iron (ppm)	12.91	14.65
11	Available Manganese (ppm)	9.43	8.37
12	Available Copper (ppm)	1.08	0.36

RECOMMENDATIONS (ORGANIC)

Parameters	Source	FYM Nutrients (kg)	Vermicompost Nutrients (kg)
N	FYM (1.95 t/ha) or Vermi Compost (0.56 t/ha)	9.75	8.91
P		3.9	3.9
K		37.27	4.46
S		0.33	1.96
Zn		0.028	0.013
B		1.51	0.01
Fe		2.86	0.098
Mn		0.15	0.053
Cu		0.33	0.003

RECOMMENDATIONS (INORGANIC)

Parameters	Source	Soil Application (kg/ha)	(or) Spray (ppm)
N	Urea	--	--
P	SSP-Single Super Phosphate	49.5	--
K	K_2O-Muriate of Potash	62.4	--
S	$(NH_4)_2SO_4$ - Ammonium sulfate	8.12	3.63
Zn	$ZnSO_4$-Zinc sulfate	3.3	1.45
B	Borax	--	--
Fe	$FeSO_4$-Ferrous sulfate	--	--
Mn	$MnSO_4$-Manganese Sulfate	7.78	3.48
Cu	$CuSO_4$-Copper Sulfate	6.5	2.88

Please use either organic or inorganic recommendation.

Protect our forest before it's too late

- Organic manures improve soil health.
- Use fertilizer judiciously as recommended.
- Adopt integrated nutrient management for healthy soil and increased forest productivity.

Financial support : Compensatory Afforestation Fund Management and Planning Authority (CAMPA), Ministry of Environment, Forest & Climate Change, Government of India.

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण का मुख्य उद्देश्य राज्य मे अवक्रमित मिटटी की उर्वरता संबंधी बाधाओं का निदान कर मिटटी के पोषक तत्व प्रबंधन प्रथाओं का सुझाव देकर उसे गैर अवक्रमित मिटटी के स्तर तक पहुंचाया जा सके। प्रस्तावित अध्यन मिटटी के गुणवत्ता के मापदंडो पर जानकारी प्रदान करेगा जो राज्य के वन विभाग (SFD's) के लिए वनो के स्थायी प्रबंधन , वृक्षारोपण के लिए उपयोगी होगा और अंततः इसका लाभ वनो के निकट रहने वाले ग्रामीण जनता तक पहुंचेगा।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "झारखण्ड राज्य के वन मृदा कार्ड" को जारी किया गया

Azadi Ka Amrit Mahotsav

02.12.2022

झारखंड देश का प्रथम राज्य बना जिसके वनों का मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया

इस कार्य का संपादन अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना -22 "भारत के सभी वन प्रभागों में विभिन्न वन वनस्पति के तहत वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण (राष्ट्रीय परियोजना निदेशक - डॉ. विजेंदर पंवार; प्रधान अन्वेषक - डॉ. शंभु नाथ मिश्रा के अंतर्गत हुआ।

देशप्राण स्वतंत्र हिन्दी दैनिक
राजधानी
Desh

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया

देशप्राण संवाददाता

पिस्का नगड़ी : वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव के द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संपत कुमार, प्रवीण झा, वाईके दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ त्रिपाठी, मनीष अरविंद सहित अधिकारीयों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं। वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों की 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था। भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, आरइडीडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है। कार्यक्रम मे संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे। अंजना तिर्की के द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र के द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

69% of soil in Jharkhand forest areas unfit for plant growth: Report

Press Trust of India
letters@hindustantimes.com

RANCHI: About 69 per cent of the soil in Jharkhand's forest areas has turned unfit for plant growth due to acute deficiency of nitrogen, as per a latest report.

The findings were revealed in the Forest Soil Health Card (FSHC) report prepared by the Ranchi-based Institute of Forest Productivity (IFP) upon the direction of the Union Ministry of Forest and Environment, a senior official said.

"There is a major deficiency of nitrogen, which is vital for plant growth, in the forest soil of the state. The presence of nitrogen in non-degraded forest should be around 258 kg per hectare, but we find it at an average of 140 kg per hectare in Jharkhand's forest soil," IFP chief technical officer Shambhu Nath Mishra told PTI.

"Most of the forest divisions are having presence of nitrogen between 160 kg and 180 kg per hectare. In quite a few areas, the figure is near 100 kg per hectare," Mishra, who is also the principal investigator of the project, said.

Saranda forest near Jamshedpur. HT ARCHIVE

Jharkhand on Friday became the "first state" in the country to release a FSHC report, he said.

As many as 16,670 soil samples were collected from 1,311 places in 31 regional forest divisions of the state, the report said.

Jharkhand is losing its dense asd well as moderate forest cover due to the deficiency of nitrogen, the official said.

Mishra said the loss of 90 kg of nitrogen could be replenished by using around 225 kg of urea per hectare. "But, we do not promote inorganic products like urea," he lamented.

SOIL HAS ACUTE DEFICIENCY OF NITROGEN NEEDED FOR GROWTH OF PLANTS, AS PER A LATEST REPORT

Alternatively, the deficiency of 90 kg of nitrogen could be restored by using 17 tonnes of farm yard manure (FYM) per hectare or 5.6 tonnes of vermicompost per hectare, Mishra explained.

Principal chief conservator of forest (PCCF), Jharkhand, Sanjay Srivastava, who released the FSHC report, said that soil is the main source of 95 per cent of food items.

"According to a report, one acre of land is degrading per second in the world. If it progresses in such a way, the situation will turn worse after 60 years," he said.

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "झारखण्ड राज्य के वन मृदा कार्ड" को जारी किया गया

Azadi Ka Amrit Mahotsav

02.12.2022

मृदा मे उपलब्ध बुनियादी पोषक तत्वों पीएच, ईसी और कार्बनिक कार्बन , प्रमुख पोषक तत्व नाइट्रोजन (N), फास्फोरस (P), पोटासियम (K), माध्यमिक पोषक तत्व सल्फर (S), सूक्ष्मम पोषक तत्व जिंक (Zn), बोरॉन (B), आयरन (Fe), मैगनीज (Mn) और कॉपर (Cu) का सीमांकन कर सम्पूर्ण डाटा का सत्यापन किया गया।

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन

संवाददाता

पिस्का नगड़ी : वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया । मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव के द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संपत कुमार, प्रवीण झा, वाईके दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ त्रिपाठी, मनीष अरविंद सहित अधिकारीयों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं। वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया । इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों की 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था। भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, आरइडीडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है। कार्यक्रम मे संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे। अंजना तिर्की के द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र के द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

NDTV

Live TV | Top News | India | World Cup

Home / India News / 69% Of Jharkhand's Forest Ar...

69% Of Jharkhand's Forest Areas Unfit For Plant Growth: Report

Jharkhand is losing its dense asd well as moderate forest cover due to the deficiency of nitrogen, the official said.

INDIA TODAY | DAILYO | INDIATODAYNE | MALAYALAM | BUSI

INDIA TODAY

News / India / Around 69% of soil in Jharkhand's forest areas u...

ASSEMBLY ELECTION 2022
ASSOCIATE SPONSOR
GreatWhite Electricals
duroflex

Around 69% of soil in Jharkhand's forest areas unfit for plant growth: Report

As many as 16,670 soil samples were collected from 1,311 places in 31 regional forest divisions of the state for the study. Jharkhand on Friday became the "first state" in the country to release an FSHC report.

वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम 'वन मृदा स...

रांची (हि.स) : पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार वानिकी अनुसंधान, शिक्षा परिषद, देहरादून के अधीन वन उत्पादकता संस्थान में झारखंड राज्य के लिए शुक्रवार को देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मौके पर झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है। क्योंकि दो दिनों बाद मृदा दिवस मनाया जाएगा. इस हेल्थ कार्ड में बताया गया है कि 95 प्रतिशत खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी है। रिपोर्ट के आधार पर विश्व प्रति सेकंड एक एकड़ जमीन का मृदा खो रहा है और 60 साल बाद हम मृदा विहीन हो जायेंगे। इसकी

कल्पना कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वहीं रांची के वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया था। इसमें वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी सहभागी था, जो पूर्वी क्षेत्र के वन अनुसंधान कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया है। उन्होंने कहा कि कोविड की समस्या के बावजूद भी संस्थान के द्वारा तय समय सीमा के अंदर राज्य के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया। इसमें ढाई से तीन बिलियन कार्बन को कम करना एक बड़ी जिम्मेवारी है, जिसे हमें हासिल करना है। तीस प्रतिशत जमीन अवक्रमित हैं तथा 68 प्रतिशत अवक्रमित हो रहे हैं, जो भविष्य और अगली पीढ़ी के लिए चिंता का विषय है। राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार ने परियोजना का सिंहावलोकन कर बताया कि वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण का मुख्य उद्देश्य राज्य में अवक्रमित मृदा की उर्वरता संबंधी बाधाओं का निदान कर मिट्टी के पोषक तत्व प्रबंधन प्रथाओं का सुझाव देकर उसे गैर अवक्रमित मिट्टी के स्तर तक पहुंचाया जा सके। प्रस्तावित अध्ययन मृदा की गुणवत्ता के मापदंडों पर जानकारी प्रदान करेगा जो राज्य के वन विभाग के लिए वनों के स्थायी प्रबंधन, वृक्षारोपण, हितधारकों के लिए मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर वृक्ष प्रजाति का चयन करने तथा स्थान की पहचान करने में मदद करेगा। संस्थान के प्रधान अन्वेषक डॉ शंभु नाथ मिश्रा ने झारखंड राज्य के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण के बारे मे प्रस्तुतीकरण किया। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा जीआईएस और रिमोट सेंसिंग की सहायता से झारखंड राज्य के 31 प्रादेशिक वन प्रमंडलों से 1311 स्थानों से मिट्टी के नमूनों को एकत्र कर संस्थान के प्रयोगशाला मे 16670 मृदा विश्लेषण किया गया और सांख्यिकीय मदद से नमूना बिंदुओं तथा मृदा में उपलब्ध बुनियादी पोषक तत्वों, प्रमुख पोषक तत्वों, माध्यमिक पोषक तत्वों एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का सीमांकन कर देश में सर्वप्रथम झारखंड राज्य के 31 वन प्रमंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "झारखण्ड राज्य के वन मृदा कार्ड" को जारी किया गया

Azadi Ka Amrit Mahotsav

02.12.2022

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड क्षेत्र की मृदा संबंधी बाधाओं की पहचान करनें के लिये उपयोगी होगा

THE WEEK

Home › Wire Updates › NATIONAL › › ›

69 pc of soil in Jharkhand's forest areas unfit for plant growth Report

PTI

Updated: December 04, 2022 12:14 IST

Ranchi, Dec 4 (PTI) About 69 per cent of the soil in Jharkhand's forest areas has turned unfit for plant growth due to acute deficiency of nitrogen, as per a latest report.

The findings were revealed in the Forest Soil Health Card (FSHC) report prepared by the Ranchi-based Institute of Forest Productivity (IFP) upon the

NDTV

Live TV | Top News | India | World Cup

India News | Press Trust of India

Updated : December 04, 2022 1:36 pm IST

Jharkhand is the "first state"in the country to release a FSHC report. (Representational image)

Ranchi: About 69 per cent of the soil in Jharkhand's forest areas has turned unfit for plant growth due to acute deficiency of nitrogen, as per a latest report.

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "झारखण्ड राज्य के वन मृदा कार्ड" को जारी किया गया

02.12.2022

परियोजना की वित्तीय सहायता: क्षतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (CAMPA),

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार।

First forest soil health card of country released

SANJAY SAHAY

RANCHI: Institute of Forest Productivity (IFP) on Friday released the forest soil health card of Jharkhand, the first of its kind in the country, in the presence senior forest officers.

According to the report PH value of soil in the state was slightly acidic and the electrical conductivity was less than 2. The effect of salinity was negligible in the state. The organic carbon in most of the forest divisions was 0.4 percent.

Under the moderately acidic conditions the availability of micronutrients are higher and that of nitrogen, sulphur and potassium is moderate. Phosphorous availability is low. This condition was also observed in Jharkhand also the report stated.

It stated that conjoint use of inorganic sources of of micronutrients and other organic sources is effective in ameliorating the micronutrients deficiencies in soil.

It stated that low soil nitrogen has proved to be a major factor limited the growth of plants in the state. Higher urea application was recommended for Lohardaga, Chaibsasa, Pakur and Kolhan areas. In Bokaro and Sahibganj, however, there no need for urea as the soil has the optimum nitrogen in these areas.

The report would help the state forest department in long term management of forests, plantation and selection of breeds according to soil quality.

The report would also help the forest department remove the soil related hurdles and also help benefit the villagers residing near the forests.

Chief investigator of the institute Sambhu Nath Mishra said using GIS and remote sensing 16,670 soil samples were collected from 1,311 places and were analysed for nutrient matters.

The report stated that common vegetation observed in Jharkhand state was Sal which is followed by Mahua, Karam, Sisha, Kend, Assan, Dhota , Chironji.

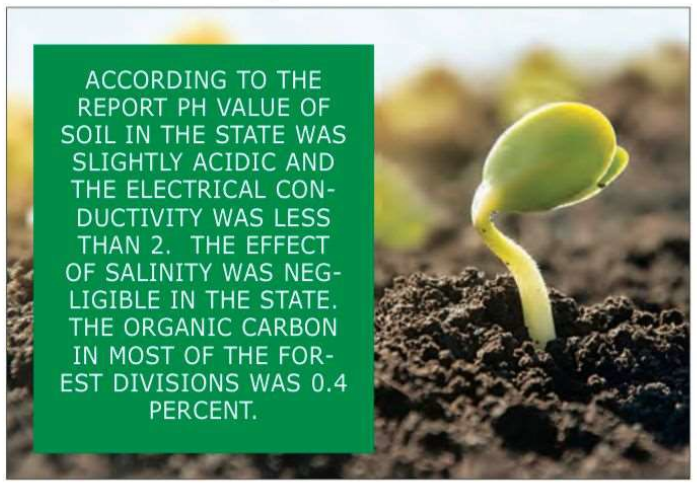

INDIA TODAY DAILYO INDIATODAYNE MALAYALAM BUSI

INDIA TODAY

News / India / Around 69% of soil in Jharkhand's forest areas u...

ASSEMBLY ELECTION 2022

ASSOCIATE SPONSOR GreatWhite Electricals duroflex

Around 69% of soil in Jharkhand's forest areas unfit for plant growth: Report

As many as 16,670 soil samples were collected from 1,311 places in 31 regional forest divisions of the state for the study. Jharkhand on Friday became the "first state" in the country to release an FSHC report.

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "झारखण्ड राज्य के वन मृदा कार्ड" को जारी किया गया

02.12.2022

रांची | वन उत्पादकता संस्थान के प्रयास से वनों के किनारे रहने वाले ग्रामीणों को मिलेगा लाभ

'वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड' का किया गया लोकार्पण

संवाददाता।रांची

रांची में झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया. विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव उपस्थित थे. इस मौके पर संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है. क्योंकि दो दिन बाद मृदा दिवस मनाया जाएगा. इस हेल्थ कार्ड में बताया गया है कि 95 प्रतिशत खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी है. रिपोर्ट के आधार पर विश्व प्रति सेकंड एक एकड़ जमीन का मृदा खो रहा है. और 60 साल बाद हम मृदा विहीन हो जाएगे. इसकी कल्पना कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं. वहीं रांची के वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया. परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया था. इसमें वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी सहभागी था, जो पूर्वी क्षेत्र के वन अनुसंधान कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है. इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया है. इसका लाभ वनों के किनारे रहने वाले ग्रामीण जनता तक पहुंचेगा तथा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड क्षेत्र की मृदा संबंधी बाधाओं की पहचान करने के लिए बहुत उपयोगी होगा.

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड निर्माण का प्रस्तुतिकरण

संस्थान के प्रधान अन्वेषक डॉ शंभु नाथ मिश्रा ने झारखंड राज्य के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण के बारे में प्रस्तुतीकरण किया. उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा जीआईएस और रिमोट सेंसिंग की सहायता से झारखंड राज्य के 31 प्रादेशिक वन प्रमंडलों से 1311 स्थानों से मिट्टी के नमूनों को एकत्र कर संस्थान के प्रयोगशाला मे 16670 मृदा विश्लेषण किया गया और सांख्यिकीय मदद से नमूना बिंदुओं तथा मृदा मे उपलब्ध बुनियादी पोषक तत्वों, प्रमुख पोषक तत्वों, माध्यमिक पोषक तत्वों एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का सीमांकन कर देश मे सर्वप्रथम झारखंड राज्य के 31 वन प्रमंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया.

वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है: संजय

मिथिला जागृति। वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव के द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संगत कुमार, प्रवीण झा, वाईके दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ त्रिपाठी, मनीष अरविंद सहित अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर किया।

मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया।

इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों को 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था।

भारत मानचित्रण, मृदा की गुणवत्ता, आरएडीडी+, ग्रीन इंडिया आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है।

कार्यक्रम में संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे।

अंजना तिर्की के द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र के द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "झारखण्ड राज्य के वन मृदा कार्ड" को जारी किया गया

वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का किया लोकार्पण

02.12.2022

प्रभात मंत्र संवाददाता

रांची : पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार वानिकी अनुसंधान, शिक्षा परिषद, देहरादून के अधीन वन उत्पादकता संस्थान में झारखंड राज्य के लिए शुक्रवार को देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मौके पर झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है। क्योंकि दो दिनों बाद मृदा दिवस मनाया जाएगा. इस हेल्थ कार्ड में बताया गया है कि 95 प्रतिशत खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी है। रिपोर्ट के आधार पर विश्व प्रति सेकंड एक एकड़ जमीन का मृदा खो रहा है और 60 साल बाद हम मृदा विहीन हो जायेंगे। इसकी कल्पना कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वहीं रांची के वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरु किया गया था। इसमें वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी सहभागी था, जो पूर्वी क्षेत्र के वन अनुसंधान कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया है।उन्होंने कहा कि कोविड की समस्या के बावजूद भी संस्थान के द्वारा तय समय सीमा के अंदर राज्य के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया। इसमें ढाई से तीन बिलियन कार्बन को कम करना एक बड़ी जिम्मेवारी है, जिसे हमें हासिल करना है। तीस प्रतिशत जमीन अवक्रमित हैं तथा 68 प्रतिशत अवक्रमित हो रहे हैं, जो भविष्य और अगली पीढ़ी के लिए चिंता का विषय है। राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार ने परियोजना का सिंहावलोकन कर बताया कि वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण का मुख्य उदेश्य राज्य में अवक्रमित मृदा की उर्वरता संबंधी बाधाओं का निदान कर मिट्टी के पोषक तत्व प्रबंधन प्रथाओं का सुझाव देकर उसे गैर अवक्रमित मिट्टी के स्तर तक पहुंचाया जा सके। प्रस्तावित अध्ययन मृदा की गुणवत्ता के मापदंडों पर जानकारी प्रदान करेगा जो राज्य के वन विभाग के लिए वनों के स्थायी प्रबंधन, वृक्षारोपण, हितधारकों के लिए मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर वृक्ष प्रजाति का चयन करने तथा स्थान की पहचान करने में मदद करेगा। संस्थान के प्रधान अन्वेषक डॉ शंभु नाथ मिश्रा ने झारखंड राज्य के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण के बारे मे प्रस्तुतीकरण किया। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा जीआईएस और रिमोट सेंसिंग की सहायता से झारखंड राज्य के 31 प्रादेशिक वन प्रमंडलों से 1311 स्थानों से मिट्टी के नमूनों को एकत्र कर संस्थान के प्रयोगशाला मे 16670 मृदा विश्लेषण किया गया और सांख्यिकीय मदद से नमूना बिंदुओं तथा मृदा में उपलब्ध बुनियादी पोषक तत्वों, प्रमुख पोषक तत्वों, माध्यमिक पोषक तत्वों एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का सीमांकन कर देश में सर्वप्रथम झारखंड राज्य के 31 वन प्रमंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया।

राजधानी रांची, शनिवार 03.12.2022 खबर मन्त्र 03

झारखंड के लिए देश में पहले 'वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड' का लोकार्पण

विश्व हर सेकंड एक एकड़ मिट्टी खो रहा, बढ़ रहा खतरा : संजय श्रीवास्तव

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची : पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और वन उत्पादकता संस्थान ने शुक्रवार को रांची में झारखंड के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया। विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव उपस्थित थे।

95 फीसदी खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी : मौके पर संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद मृदा दिवस मनाया जाएगा। इस हेल्थ कार्ड में बताया गया है कि 95 प्रतिशत खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी है। रिपोर्ट के आधार पर विश्व प्रति सेकंड 1 एकड़ जमीन की मिट्टी खो रहा है और 60 साल बाद हम मृदा विहीन हो जायेंगे। इसकी कल्पना कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

रांची का वन उत्पादकता संस्थान बना सहभागी

रांची के वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया था। इसमें वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी सहभागी था, जो पूर्वी क्षेत्र के वन अनुसंधान कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया है।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "झारखण्ड राज्य के वन मृदा कार्ड" को जारी किया गया

Azadi Ka Amrit Mahotsav

02.12.2022

रांची/आसपास
शनिवार,
web: rashtri

वन उत्पादकता संस्थान में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन आयोजित

राष्ट्रीय सागर संवददाता

पिस्का नगड़ी : वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव के द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संपत कुमार, प्रवीण झा, बाङ्कि दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ त्रिपाठी, मनीष अरविंद सहित अधिकारीयों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं। वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरूण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों की 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था। भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, आरइडीडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है। कार्यक्रम मे संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे। अंजना तिर्की के द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र के द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

www.avnpost.com रांची/आस-पास रांची, शनिवार 03 दिसंबर 2022 02

देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का लोकार्पण

पंच संवाददाता

रांची । पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार वानिकी अनुसंधान, शिक्षा परिषद, देहरादून के अधीन वन उत्पादकता संस्थान, रांची में झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव उपस्थित थे।

95 फीसदी खाद्य का मुख्य स्रोत मिट्टी

इस मौके पर संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है. क्योंकि दो दिनों बाद मृदा दिवस मनाया जाएगा. इस हेल्थ कार्ड में बताया गया है कि 95 प्रतिशत खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी है। रिपोर्ट के आधार पर विश्व प्रति सेकंड एक एकड़ जमीन का मृदा खो रहा है. और 60 साल बाद हम मृदा विहीन हो जायेंगे। इसकी कल्पना कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वहीं रांची के वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि भारत सरकार के पर्यावरण,वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया था. इसमें वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी सहभागी था, जो पूर्वी क्षेत्र के वन अनुसंधान कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है. इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया है.तय समय के भीतर वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कोविड की समस्या के बावजूद भी संस्थान के द्वारा तय समय सीमा के अंदर राज्य के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया. इसमें ढाई से तीन बिलियन कार्बन को कम करना एक बड़ी जिम्मेवारी है. जिसे हमें हासिल करना है. तीस प्रतिशत जमीन अवक्रमित हैं तथा 68 प्रतिशत अवक्रमित हो रहे हैं, जो भविष्य और अगली पीढ़ी के लिए चिंता का विषय है। राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार ने परियोजना का सिंहावलोकन कर बताया कि वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण का मुख्य उद्देश्य राज्य में अवक्रमित मृदा की उर्वरता संबंधी बाधाओं का निदान कर मिट्टी के पोषक तत्व प्रबंधन प्रथाओं का सुझाव देकर उसे गैर अवक्रमित मिट्टी के स्तर तक पहुंचाया जा सके. प्रस्तावित अध्ययन मृदा की गुणवत्ता के मापदंडों पर जानकारी प्रदान करेगा जो राज्य के वन विभाग के लिए वनों के स्थायी प्रबंधन, वृक्षारोपण, हितधारकों के लिए मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर वृक्ष प्रजाति का चयन करने तथा स्थान की पहचान करने में मदद करेगा।

लाभ वनों के किनारे रहने वाले ग्रामीणों को मिलेगा

इसका लाभ वनों के किनारे रहने वाले ग्रामीण जनता तक पहुंचेगा तथा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड क्षेत्र की मृदा संबंधी बाधाओं की पहचान करने के लिए बहुत उपयोगी होगा. भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, [illegible], ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है। देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी करने के लिए राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक के नाते मई संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी एवं परियोजना अन्वेषक को बधाई भी दी गई। वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड निर्माण का प्रस्तुतिकरण संस्थान के प्रधान अन्वेषक डॉ शंभु नाथ मिश्रा ने झारखंड राज्य के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण के बारे मे प्रस्तुतीकरण किया. उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा जीआईएस और रिमोट सेंसिंग की सहायता से झारखंड राज्य के 31 प्रादेशिक वन प्रमंडलों से 1311 स्थानों से मिट्टी के नमूनों को एकत्र कर संस्थान के प्रयोगशाला मे 16670 मृदा विश्लेषण किया गया और साँख्यिकीय मदद से नमूना बिंदुओं तथा मृदा मे उपलब्ध बुनियादी पोषक तत्वों, प्रमुख पोषक तत्वों, माध्यमिक पोषक तत्वों एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का सीमांकन कर देश मे सर्वप्रथम झारखंड राज्य के 31 वन प्रमंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया। कार्यक्रम में शशिकर सामंत, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन्यजीव, कुलवंत सिंह, अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कार्य योजना, एन.के. सिंह, मुख्य वन संरक्षक, वन्यजीव, सिद्धार्थ त्रिपाठी, संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की, भा.व.से.एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "झारखण्ड राज्य के वन मृदा कार्ड" को जारी किया गया

Azadi Ka Amrit Mahotsav

02.12.2022

वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम 'वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड' का किया लोकार्पण

रांची (हि.स) : पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार वानिकी अनुसंधान, शिक्षा परिषद, देहरादून के अधीन वन उत्पादकता संस्थान में झारखंड राज्य के लिए शुक्रवार को देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मौके पर झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है। क्योंकि दो दिनों बाद मृदा दिवस मनाया जाएगा. इस हेल्थ कार्ड में बताया गया है कि 95 प्रतिशत खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी है। रिपोर्ट के आधार पर विश्व प्रति सेकंड एक एकड़ जमीन का मृदा खो रहा है और 60 साल बाद हम मृदा विहीन हो जायेंगे। इसकी कल्पना कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वहीं रांची के वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया था। इसमें वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी सहभागी था, जो पूर्वी क्षेत्र के वन अनुसंधान कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया है। उन्होंने कहा कि कोविड की समस्या के बावजूद भी संस्थान के द्वारा तय समय सीमा के अंदर राज्य के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया। इसमें ढाई से तीन बिलियन कार्बन को कम करना एक बड़ी जिम्मेवारी है, जिसे हमें हासिल करना है। तीस प्रतिशत जमीन अवक्रमित हैं तथा 68 प्रतिशत अवक्रमित हो रहे हैं, जो भविष्य और अगली पीढ़ी के लिए चिंता का विषय है। राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार ने परियोजना का सिंहावलोकन कर बताया कि वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण का मुख्य उदेश्य राज्य में अवक्रमित मृदा की उर्वरता संबंधी बाधाओं का निदान कर मिट्टी के पोषक तत्व प्रबंधन प्रथाओं का सुझाव देकर उसे गैर अवक्रमित मिट्टी के स्तर तक पहुंचाया जा सके। प्रस्तावित अध्ययन मृदा की गुणवत्ता के मापदंडों पर जानकारी प्रदान करेगा जो राज्य के वन विभाग के लिए वनों के स्थायी प्रबंधन, वृक्षारोपण, हितधारकों के लिए मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर वृक्ष प्रजाति का चयन करने तथा स्थान की पहचान करने में मदद करेगा। संस्थान के प्रधान अन्वेषक डॉ शंभु नाथ मिश्रा ने झारखंड राज्य के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण के बारे मे प्रस्तुतीकरण किया। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा जीआईएस और रिमोट सेंसिंग की सहायता से झारखंड राज्य के 31 प्रादेशिक वन प्रमंडलों से 1311 स्थानों से मिट्टी के नमूनों को एकत्र कर संस्थान के प्रयोगशाला मे 16670 मृदा विश्लेषण किया गया और सांख्यिकीय मदद से नमूना बिंदुओं तथा मृदा में उपलब्ध बुनियादी पोषक तत्वों, प्रमुख पोषक तत्वों, माध्यमिक पोषक तत्वों एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का सीमांकन कर देश में सर्वप्रथम झारखंड राज्य के 31 वन प्रमंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया।

सूर्योदय प्रातः 6:15 सूर्यास्त संध्या 5:02 मार्गशीर्ष शु. दशमी, संवत 2079 अधिकतम 25° न्यूनतम 12°

फ्रीडम फाइटर

राष्ट्रहित सर्वोपरि

रांची, पटना व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का किया गया विमोचन

फ्रीडम फाइटर संवाददाता

पिस्का नगड़ी : वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संपत कुमार, प्रवीण झा, वाईके दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ त्रिपाठी, मनीष अरविंद सहित अधिकारीयों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं। वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों की 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था।

भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, आरइडीडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है। कार्यक्रम मे संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे। अंजना तिर्की द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।